e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, सोमवार, 5 सितंबर 2016, भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी, संवत् 2073 विक्रमी
वर्ष-9, अंक-319, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 4.00, आमंत्रण मूल्य- ₹ 3.00, नगर संस्करण
website : www.dnahindi.com
शब्द शब्द संघर्ष
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट
RNI NO.: UPHIN/2007/41982
डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18
संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद ■ वाराणसी ■ फैजाबाद ■ कानपुर

अच्छे शिक्षक की पहचान

● डॉ. भरत राज सिंह
brsinghlko@yahoo.com

आज शिक्षक दिवस है और देशभर में बच्चों द्वारा भविष्य रोशन करने की कलाएं प्रस्तुत की जाएंगी। इस अवसर पर भारतीय महापुरुष डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती भी मनाई जाएगी। असल में उनकी जयंती ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाई जाती है। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनके पहले भी भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक शिक्षक रहे हैं। राम से लेकर विवेकानंद तक जितने भी युगनायक हुए हैं, उनके पीछे किसी महान गुरु का आशीर्वाद और शिक्षा रही है। शिक्षण पद्धति तो आदिकाल से चली आ रही है तथा हमारे पौराणिक ग्रंथों में गुरु-शिष्य परंपरा का जिक्र मिलता है। जिसमें ऋषियों-मुनियों द्वारा गुरुकुल व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा का जिक्र है। गुरुकुल क्या है, आइए इसको समझने की कोशिश करें।

प्राचीनकाल में जब विद्यार्थी गुरु के आश्रम में नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण करता था तो इसी दिन श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर अपने गुरु का पूजन करके उन्हें अपनी सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देकर कृतकृत्य होता था। देवताओं के गुरु थे बृहस्पति और असुरों के गुरु थे शुक्राचार्य। भारतीय इतिहास में एक से बढ़कर एक महान युग नायक मिले। कण्व, भारद्वाज, वेदव्यास, अत्रि से लेकर वल्लभाचार्य, गोविंदाचार्य, गजानन महाराज, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि सभी अपने काल के महान गुरु थे।

गुरु वशिष्ठ : राजा दशरथ के कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ को कौन नहीं जानता। ये दशरथ के चारों पुत्रों के गुरु थे। त्रेतायुग में भगवान राम के गुरु रहे, श्री वशिष्ठ भी भारतीय गुरुओं में उच्च स्थान पर हैं।

गुरु विश्वामित्र : भगवान राम को परम योद्धा बनाने का श्रेय विश्वामित्र ऋषि को जाता है। विश्वामित्र को अपने जमाने का सबसे बड़ा आयुध अविष्कारक माना जाता है। उन्होंने ब्रह्मा के समकक्ष एक और सृष्टि की रचना कर डाली थी।

सांदीपनि : भगवान श्रीकृष्ण के गुरु आचार्य सांदीपनि थे। उज्जयिनी वर्तमान में उज्जैन में अपने आश्रम में

आचार्य सांदीपनि ने भगवान श्रीकृष्ण को 64 कलाओं की शिक्षा दी थी। भगवान श्रीकृष्ण ने 64 दिन में ये कलाएं सीखीं थी। सांदीपनि ऋषि ने भगवान शिव को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त किया था कि उज्जैयिनी में कभी अकाल नहीं पड़ेगा।

द्रोणाचार्य : द्वापरयुग में कौरवों और पांडवों के गुरु रहे द्रोणाचार्य भी श्रेष्ठ शिक्षकों की श्रेणी में काफी सम्मान से गिने जाते हैं। द्रोणाचार्य ने अर्जुन जैसे योद्धा को शिक्षित किया, जिसने पूरे महाभारत युद्ध का परिणाम अपने पराक्रम के बल पर बदल दिया। द्रोणाचार्य अपने युग के श्रेष्ठतम शिक्षक थे।

चाणक्य : आचार्य विष्णु गुप्त यानी चाणक्य युगनायक माने गए हैं। दुनिया के सबसे पहले राजनीतिक षड्यंत्र के रचयिता आचार्य चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य जैसे साधारण भारतीय युवक को सिकंदर और धनानंद जैसे महान सम्राटों के सामने खड़ाकर कूटनीतिक युद्ध कराए। वे मूलत: अर्थशास्त्र के शिक्षक थे, लेकिन उनकी असाधारण राजनीतिक समझ के कारण वे बहुत बड़े रणनीतिकार माने गए।

रामकृष्ण परमहंस : स्वामी विवेकानंद के गुरु आचार्य रामकृष्ण परमहंस भक्तों की श्रेणी में श्रेष्ठ माने गए हैं। उन्हीं की शिक्षा और ज्ञान से स्वामी विवेकानंद ने दुनिया में भारत को विश्वगुरु का परचम दिलाया।

कलयुग में भी गुरु चाणक्य व महर्षि रामकृष्ण परमहंस द्वारा भी शिक्षा अपने शिष्यों को आश्रम में ही देने का जिक्र मिलता है। परंतु समय की मांग व आर्थिक युग के पदार्पण से शिक्षा ने भी व्यवसायिक रूप ग्रहण कर लिया और सभी नगरों व कस्बों में स्कूल-कॉलेज खोलकर शिक्षा का ज्ञान दिया जाने लगा।

प्रश्न यह उठता है कि इस भौतिकवादी व्यवस्था में क्या हम पुराने शिक्षण प्रणाली को लागू कर सकते हैं। यह संभव नहीं है। यों किसी भी देश के विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। ऐसे में हमें शिक्षण व्यवस्था में गुरुजन, जिन्हें अनुभव है व वरिष्ठ हैं, वह चाहे जिस क्षेत्र से सेवानिवृत्त हों, समाज व राष्ट्रहित में बीड़ा उठाएं कि अच्छे शिक्षक तैयार करेंगे। उनमें नैतिकता का विकास सर्वप्रथम करेंगे। फिर शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने की बात की जाए।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अच्छे अंक, सर्टिफिकेट अथवा डिग्री दे सकती है, जो किसी भी अच्छे सेवायोजक की न्यूनतम आवश्यकता मानी जा सकती है, परंतु उसमें नैतिकता का विकास नहीं है तो वह उस सेवायोजक के यहां पहले तो नौकरी नहीं पा सकता है और यदि पा भी गया तो कार्यकुशलता के अभाव में कुछ ही दिनों में अयोग्य घोषित होकर निकाल दिया जाएगा।

अच्छे शिक्षक के लिए हम अभी हाल का ही एक उदाहरण ले सकते हैं। रियो ओलंपिक में सिल्वर पदक पानेवाली पीवी सिंधु और उसके गुरु पुलेला गोपीचंद का। सिंधु ने गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वहन करते हुए अपने गुरु के दिशा-निर्देश में समर्पण भाव से प्रशिक्षण प्राप्त किया। लक्ष्य एक ही था, अपना पूर्ण ध्यान केंद्रित कर खेल को उच्च स्तर पर पहुंचाना। तीन माह से मोबाइल फोन भी गुरु ने अपने पास रख लिया, जिससे उसका ध्यान खेल के अलावा कहीं न भटके। ऐसे शिक्षक-शिष्य को पूरे भारत ने सलाम किया।

(लेखक स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के निदेशक हैं)